Dhanauri International Journalof Multidisciplinary Research (DIJMR)
Volume 1 Issue 1, August (2025)

जौनसार–बाबर में न्याय पंचायत क्षेत्र की जनसंख्या संरचना का एक भौगैलिक अध्ययन

(A Geographical Study of the Population Structure of the Nyaya Panchayat Area in Jaunsar-Bawar)

1 Dr. Nepal Singh and **2 Sharan Singh**

1. **Dr. Nepal Singh,** Assistant Professor in Department of Geography, Govt. PG College Joshimath, Chamoli (Uttarakhand) **Email: snepal844@gmail.com**
2. **Sharan Singh**, Research Scholar in Department of Political Science, Kumaun University Nainital (Uttarakhand) **Email: chauhansaran@gmail.com**

अमूर्त (Abstract)

किसी भी राष्ट्र में उसकी कुल जनसंख्या ही मानव संसाधन है और जनसंख्या को संसाधनों के एक घटक के रूप में मान्यता प्राप्त है।जिसकी पुष्टि भारतीय केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में मानव संसाधन तथा विकास मंत्रालय की स्थापना से होती है, मानव तथा आर्थिक भूगोल मानव का प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के विषय की जानकारी प्रदान करते है। मानव स्वयं का पहले से ही अध्ययन करता आ रहा है। विषयगत् अध्ययनों के अन्तर्गत आज मानव का अनेको प्रकार से अध्ययन किया जा रहा है, भूगोल में मानव को मुख्य केन्द्र मानकर अनेको विद्धानों द्वारा अध्ययन किया गया है, किन्तु भूगोल के अन्तर्गत जनसंख्या भूगोल एक महत्तवपूर्ण शाखा के रूप में विकसित करने का श्रेय जी0 टी0 श्विार्थ को है, जिन्होने 1953 में अपने व्याख्यान के अन्तर्गत इसे भूगोल की एक अलग शाखा के रूप में विकसित करने का आवाहन किया। पर्वतीय परिप्रेक्ष में मानव संसाधन के विकास में जो अन्तर पाया जाता है वह क्षेत्र की भौगोलिक धरातलीय विषमताओं का अभिशाप और विकास योजनाओं का समान कियान्वयन न हो पाने का ही दुष्परिणाम है। हिमालय क्षेत्र मे प्राकृतिक कुरूरता के कारण यहां का जनसंख्यात्मक स्वरूप मात्रात्मक एंव गुणात्मक दोनो पहलुओं में मैदानी क्षेत्रों की तुलना में यहा बिल्कुल अलग है। अतः पर्वतीय संस्कृति का मानव संस्कृतियों में अपना विशिष्ट स्थान है।

मुख्य शब्द (Keywords): जनसंख्या मानव संसाधन के परिपेक्ष्य में, जनसंख्या का स्थानिक वितरण, जनसंख्या घनत्व, आयु–संरचना तथा लिंगानुपात।

प्रस्तावना (Introduction)

जौनसार–बावर क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से उत्तराखण्ड़ राज्य के देहरादून जिले के उत्तर–पश्चिम भाग में अवस्थित है। इसका भौगोलिक विस्तार 30° 0′ से 30° 2′ उत्तरी अक्षांश तक तथा पूरब–पश्चिम विस्तर में 77° 38′ से 78° 4′ पूर्वी देशान्तर तक फेला हुआ है। जौनसार–बावर जनजातिय क्षेत्र देहरादून जनपद के कालसी और चकराता विकास खण्ड में 1000.07 वर्ग कि0मी0 में यमुना और टौंस नदियों के बीच फेला हुआ है। यह क्षेत्र उत्तर में जनपद उत्तरकाशी की रंवाई घाटी के पूर्व में टिहरी गढ़वाल के जौनपुर जनजातिय क्षेत्र से, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश के बुशहर, रैगड़ थरौच, जुब्बल और सिरमौर तथा दक्षिण में दून घाटी से घिरा हुआ है। यमुना नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है जो इसे देहरादून परगने से अलग करती है। जौनसारी कोई जाति नहीं बल्कि जौनसार–बावर क्षेत्र की उपजातियों का एक समूह है। विशिष्ट रीति–रिवाज वाले इस मानव समूह के कारण ही इस क्षेत्र को अनुसूचित संवैधानिक रूप में दर्जा दिया गया है।

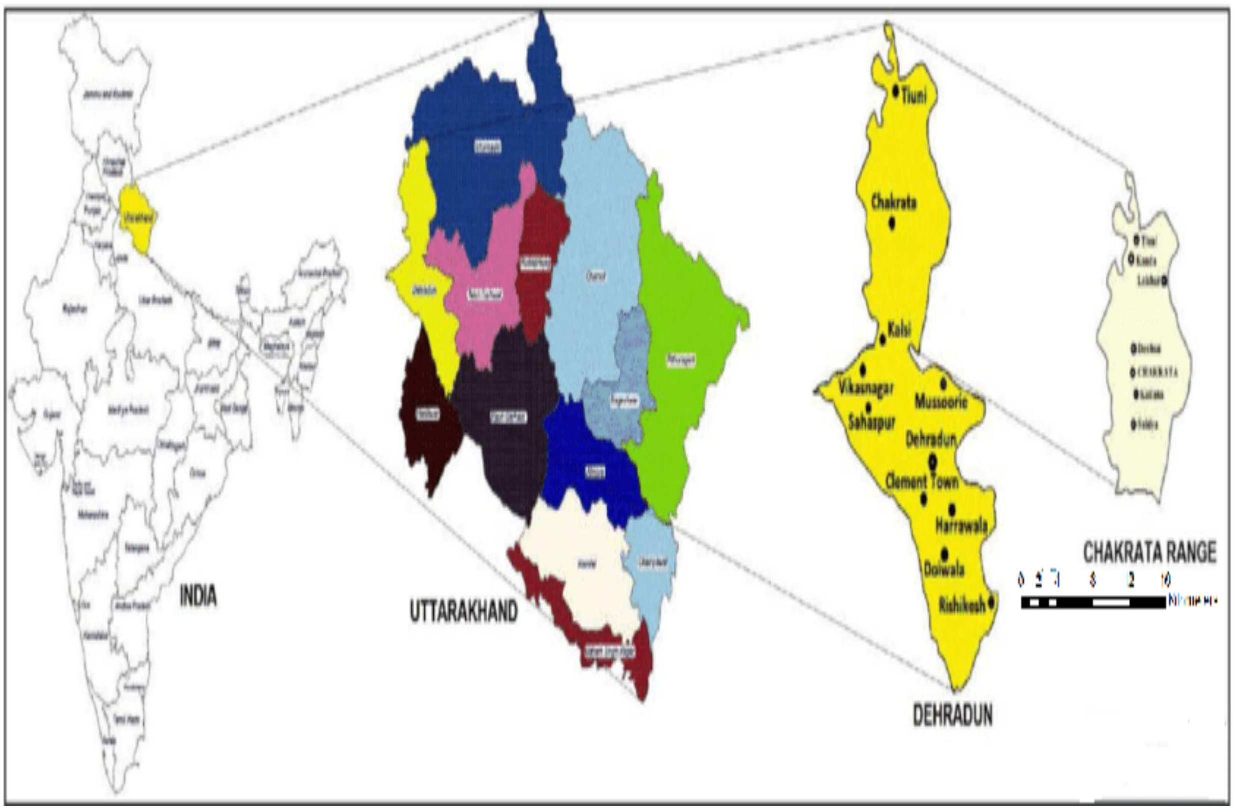

मानचित्र–1: जौनसार–बावर की अवस्थिति

शोध विधि–तंत्र (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आंकडों का संगलन के माध्यम से किया गया है, आंकडों का संकलन शोध पत्र समाचार पत्र–पत्रिकाओं आदि से किया गया है।

द्वितीयक आंकडों का संकलन– जनगणना प्रकाशन (Census Publications) वर्ष 1971 से 2011 तक के जनगणना प्रकाशनों से जनपद देहरादून के सांख्यकी विभाग से प्राप्त आंकड़ो की सहायता से जौनसार–बावर जनजातिय क्षेत्र के कुल जनसंख्या, आयु–संरचना, जनघनत्व आदि अनेक आंकड़े प्राप्त किये गये।

उद्देश्य (Objectives)

1. कुल जनसंख्या का अध्ययन करना।
2. आयु–संरचना दशकीय वृद्धि का अध्ययन करना।

तलिका संख्या– 1:विकास खण्ड चकराता एवं कालसी में व वर्ष 2011 की न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या का वितरण

क0 सं0	न्याय पंचायत का नाम	जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार	जनसंख्या प्रतिशत में
1	कालसी	13394	10.69
2	ंभंजरा	7244	5.78
3	उदपाल्टा	8055	6.43
4	खाडी	3621	2.89
5	कोटी	5563	4.44
6	मुन्धान	6338	5.06
7	नराया	2972	2.37
8	कोरवा	5863	4.68
9	डागुरा	5178	4.13
10	बृनाड बास्तिल	14069	11.23
11	भुनाड	5562	4.44
12	काण्डोइ ंबोन्दर	5875	4.69
13	मिण्डाल	5644	4.5
14	डिमिच भन्द्रोली	5044	4.02
15	दसऊ	7033	5.61
16	बेगी	5010	4.00
17	जाडी	6804	5.43
18	रंगेऊ	11960	9.55
	योग	**125229**	**100**

स्रोत– जिला अर्थ सांख्यिकी विकास भवन, देहरादून

जनसंख्या का स्थानिक वितरण (Spatial Distribution of Population)

जनसंख्या वितरण को भौगोलिक अध्ययन में केन्द्रीय स्थान प्राप्त है तथा विभिन्न भौगोलिक तथ्यों के वितरण को समझना भौगोलिक अध्ययन की मुख्य प्रक्रिया है।जनसंख्या वितरण से पहले जनसंख्या के घनत्व और वितरण के अन्तर को समझना आवशयक हैं। जनसंख्या का वितरण उन स्थानों पर होता है जहां मानवीय भौतिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण के साथ जनसंख्या घनत्व, कुल जनसंख्या तथा कुल भूमि या कुल कृषि क्षेत्र आदि से सम्बन्धित होता है। जौनसार–बावर क्षेत्र में भौगोलिक विभिन्नताओं वाला पर्वतीय क्षेत्र है। जिससे इस क्षेत्र में जनसंख्या का समान वितरण नहीं पाया जाता है। चित्र–1 से स्पष्ट होता है कि

जौनसार–बावर क्षेत्र में भौगोलिक विषमताओं के कारण यहां जनसंख्या के वितरण में विभन्नता पायी जाती है। क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण भौतिक कारणों भू–संरचना धरातल, उँचाई, वर्षा, तापमान, वनस्पति तथा जलवायु आदि के परिणाम स्वरूप आसमान रूप में मिलता है। यहां जनसंख्या का वितरण हिमालय के शीतोष्ण तथा शीत कटिबन्धों का प्रतिनिधित्व करता है। क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में रहती है, तथा कृषि व पशुपालन व्यावसायों में संल्गन है। यहां जनसंख्या का वितरण सदियों से चल रहे भौगोलिक एंव सांस्कृतिक चक्रों को सम्बन्धों का प्रतिफल है। जौनसार–बावर का उच्च भू–भाग क्षेत्र जनशून्य है तथा लघु हिमालय के पर्वतीय व नदी घाटी क्षेत्रों मे मानव अधिवास स्थित है। क्षेत्र मे सघन जनसंख्या का वितरण नगरीय क्षेत्रों व उनके आस–पास नदी घाटियों में जहां समतल कृषि योग्य भूमि व पर्याप्त जल की उपलब्धता है, वहीं सघन जनसंख्या अधिक देखने को मिलती है।

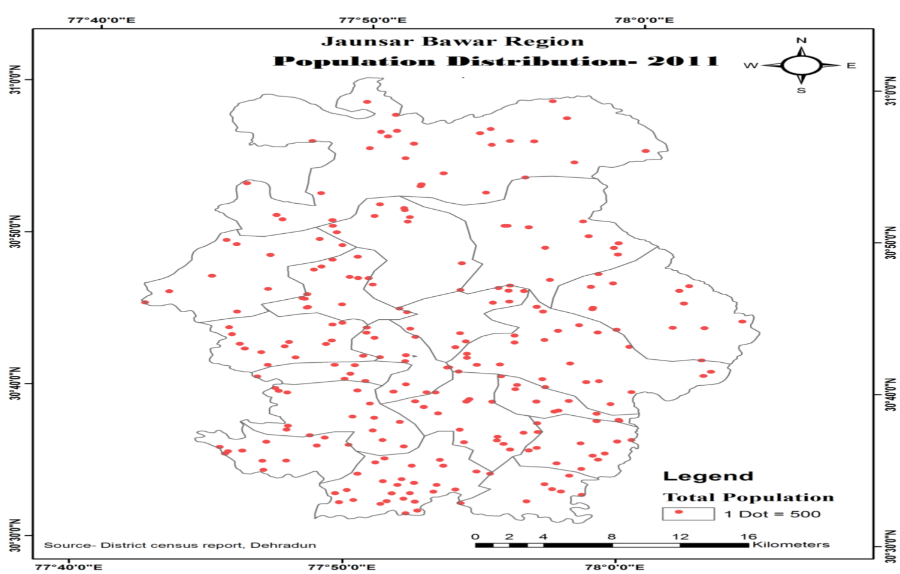

मानचित्र– 2: जौनसार–बावर में न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या का वितरण (वर्ष 2011)

उपर्युक्त तालिका संख्या–1 एवं मानचित्र संख्या–2 में विकास खण्ड चकराता व कालसी के अन्तर्गत 18 न्याय पंचायत क्षेत्रों की जनसंख्या वर्ष 2011 को स्पष्ट किया गया है। विकास खण्डों में सबसे अधिक जनसंख्या 14069 न्याय पंचायत बृनाल वास्तिल में है जो कि विकास खण्डों की कुल जनसंख्या का 11.23 प्रतिशत है। इसके बाद जनसंख्या का सर्वाधिक 10.65 प्रतिशत न्याय पंचायत कालसी में है। सबसे कम जनसंख्या का प्रतिशत 2.37 प्रतिशत नराया न्याय पंचायत क्षेत्र में पाया जाता है। उसका मुख्य कारण यह है कि इस न्याय पंचायत क्षेत्र में 6 कुल ग्राम पंचायत की संख्या 8 राजस्व ग्राम में सम्मिलित है, जो कि और न्याय पंचायत क्षेत्र से काफी कम है। अन्य क्षेत्रों में जनसंख्या का 9.55 प्रतिशत रंगेऊ, 6.43 प्रतिशत उदपाल्टा, 5.78 प्रतिशत मंजरा, 5.61 प्रतिशत दसाऊ, 5.43 प्रतिशत जाड़ी, 5.06 प्रतिशत मुन्धान, 4.69 प्रतिशत कान्डोई बोन्दोर, 4.68 प्रतिशत कोरूवा, 4.44 प्रतिशत कोटी व भुनाड, 4.13 प्रतिशत डागुरा, 4.5 प्रतिशत बेगी तथा 2.89 प्रतिशत न्याय पंचायत खाडी में पाया जाता है।

जनसंख्या घनत्व तथा स्थानिक भिन्नताए (Population Density and Spatial Variations)

विकास खण्ड कालसी व चकराता में जनसंख्या घनत्व का प्रतिरूप समतल भागों में सामान्य और पर्वतीय भागों में असामान्य पाया जाता है क्योंकि अधिवासों की संख्या के साथ–साथ जनसंख्या का प्रतिशत भी उन्ही क्षेत्रों में अधिक है जहां कृषि का घनत्व भी अधिक पाया जाता है। इस क्षेत्र में अधिकतम ग्रामीण अधिवास पहाड़ी ढालों पर बसे हुऐ है। समतल भागों में स्थित गांव किसी नदी, सड़क व कृषि योग्य भूमि के आस–पास फेले है परन्तु वर्तमान समय में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि उन्ही स्थानों में पायी गयी है। जहां सेवा केन्द्र स्थित है या जो गांव यातायात व संचार से जुड़े है, किन्तु शहरीकरण की ओर अग्रसर लोग अधिकतम मोटर गाड़ी मार्गों के समीप बसते है। जौनसार–बावर क्षेत्र में विभिन्न दशकों का जनसंख्या घनत्व तालिका–2 में दर्शाया गया है।

तालिका–2: विभिन्न दशकों में जौनसार–बावर क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व वृद्धि

क0 सं	जनगणना वर्ष	जनसंख्या घनत्व/वर्ग किमी0	दशक वृद्धि प्रतिशत में
1	1961	48.16	...
2	1971	56.19	18.21
3	1981	62.56	10.18
4	1991	76.94	18.68
5	2001	93.27	17.51
6	2011	102.63	9.12

स्रोत– सांख्यिकी विभाग देहरादून, (वर्ष 2011)

उपरोक्त तालिका संख्या–2 से विभिन्न दशकों में जनसंख्या घनत्व व दशकवार वृद्धि को दर्शाया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्ष 1961 में जन घनत्व 48.16 प्रतिवर्ग कि.मी. था। वर्ष 1971 में यह 56.19 प्रतिवर्ग किमी0 हो गया और जनसंख्या वृद्धि दर 18.21 प्रतिशत हो गयी । इसके एक दशक बाद वर्ष 1981 में 62.56 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 जनघनत्व व कुल वृद्धि 10.18 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 1991 के दशक में प्रतिवर्ग किमी0 जनघनत्व 76.94 प्रतिशत बड़ा तथा जनसंख्या वृद्धि दर 18.68 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2001 के दशक में जनघनत्व 93.27 प्रतिशत हो गया और वृद्धि दर 17.51 प्रतिशत हो गयी। वर्ष 2011 के दशक में जनघनत्व 102.62 हो गया और कुल वृद्धि दर घटकर 9.12 प्रतिशत हो गयी। विकास खण्ड कालसी व चकराता में जिस आधार पर जनसंख्या में वृद्धि हुई उसी आधार पर जनघनत्व में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 1971 की जनगणना के आधार पर जौनसार–बावर में प्रतिवर्ग किमी0 में 56.19 लोगों में वृद्धि हुई तथा वर्ष 1981 में 76.44 लोगों की कमी हुई परन्तु वर्ष 2011 के दशक में इस वृद्धि में काफी कमी आयी है। जौनसार–बावर के जनसंख्या घनत्व को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका–3: जौनसार–बावर में न्याय पंचायतवार जनसंख्या घनत्व (वर्ष 2011)

क्र0 सं0	न्याय पंचायत	न्याय पंचायत की कुल जनसंख्या (वर्ष 2011 में)	जनसंख्या घनत्व वर्ग किमी0 में
1	कालसी	13394	211.79
2	भंजरा	7244	124.06
3	उदपाल्टा	8055	149.41
4	खाडी	3621	90.91
5	कोटी	5563	136.95
6	मुन्धान	6338	156.80
7	नराया	2972	152.80
8	कोरवा	5863	188.46
9	डागुरा	5178	226.90
10	बृनाड बास्तिल	14069	59.71
11	भुनाड	5562	51.76
12	काण्डोई बोन्दर	5875	65.43

13	मिण्डाल	5644	142.41
14	डिमिच भन्द्रोली	5044	66.30
15	दसऊ	7033	130.43
16	बेगी	5010	62.29
17	जाडी	6804	162.50
18	रंगेऊ	11960	67.31

स्रोत–विकास खण्ड कालसी एवं चकराता सांख्यिकी विभाग

तालिका संख्या–3 एवं मानचित्र संख्या–3 में न्याय पंचायतों के आधार पर जनसंख्या घनत्व को स्पष्ट किया गया है। विकास खण्डों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी न्याय पंचायत बृनाड बास्तिल तथा जनसंख्या की दृष्टि से भी बृनाल बास्तिल न्याय पंचायत है परन्तु विकास खण्ड कालसी व चकराता में सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व 226.90 है, न्याय पंचायत डागुरा में है तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व 51.76 न्याय पंचायत भूनाड में हैं। इसी प्रकार जनसंख्या घनत्व में अन्तर का मुख्य कारण यह है कि विकास खण्डों के प्रत्येक न्याय पंचायत के क्षेत्रफल एंव जनसंख्या में अन्तर पाया जाता है जिसका एक ही कारण है कि भौगोलिक पृष्ठभूमि भी जनघनत्व को प्रभावित करती है।

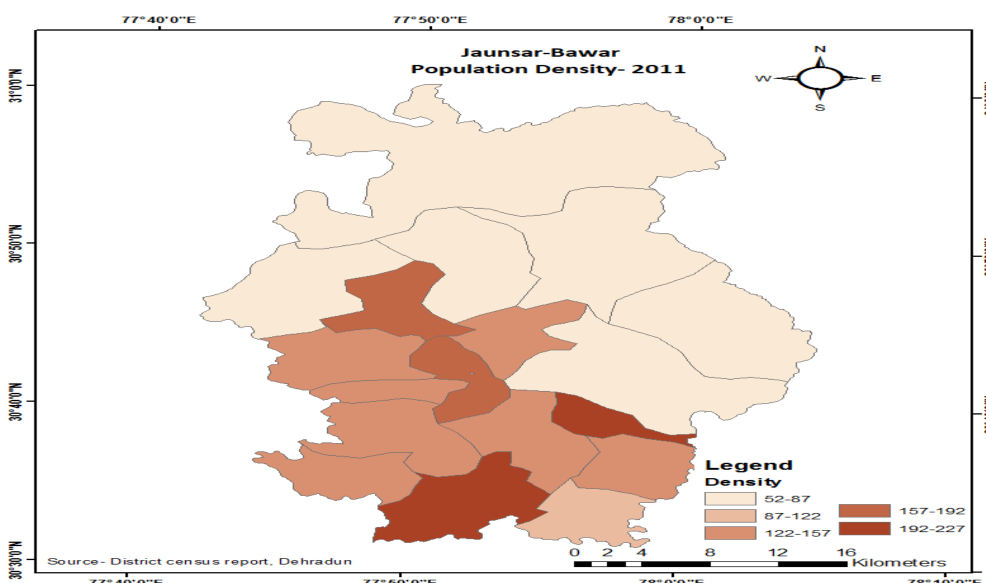

मानचित्र–3: जौनसार–बावर में वर्ष 2011 की न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या घनत्व

लिंगानुपात (Sex Ratio)

लिंगानुपात या लिंग संरचना जनांकिकी की एक मुख्य विशेषता है। मानव जनसंख्या का लिंगानुपात की एक मुख्य विशेषता है। मानव जनसंख्या का लिंगानुपात जैवीय गुणों के आधार है परन्तु अलग–अलग स्पष्ट करने का प्रथम आधार है। लिंगानुपात पर्वतीय क्षेत्रों में भी जनसंख्या की महत्वपूर्ण विशेषता है इसको सामाजिक संरचना के लगभग हर पहलू में भेद करने का आधार कहा जा सकता है। विकास खण्ड कालसी व चकराता में लिंगानुपात सम्बन्धी अनेक विशेषताओं या परिणामों के कारण यहां पर लिंगानुपात मे परिवर्तन पाया गया है। विकास खण्डों की कुल जनसंख्या में स्त्रियों की संख्या पुरूषों की अपेक्षा से कम है। लेकिन व्यवसायी पुरूषों को अलग करके देखा जाये तो स्त्रियों की संख्या ज्यादा और पुरूषों की संख्या कम पायी गयी है। इसका मुख्य कारण यह है कि अधिकांश पुरूषवर्ग रोजगार की तलाश में गावों से शहरों की ओर चले गये है।

तालिका संख्या– 4: विभिन्न दशकों में जौनसार–बावर में लिंगानुपात

दशक	लिंगानुपात
1991	792
2001	872
2011	923

स्रोत–अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग, देहरादून

उपर्युक्त तालिका संख्या–4 से विभिन्न दशकों में लिंगानुपात को स्पष्ट किया गया है। वर्ष 1991 में लिंगानुपात मात्र प्रति हजार पुरूषों पर 792 था जो कि वर्ष 2001 में बढ़कर 872 हो गया, वर्ष 2011 में प्रति हजार पुरूष पर 923 स्त्रियां पायी गयी है। इस दशक में महिलाओ की संख्या में बढ़ोतरी हुई है इसका मुख्य कारण यह है कि लिंग जाँच में प्रतिबन्ध और लड़के–लड़की में समानता रही है।

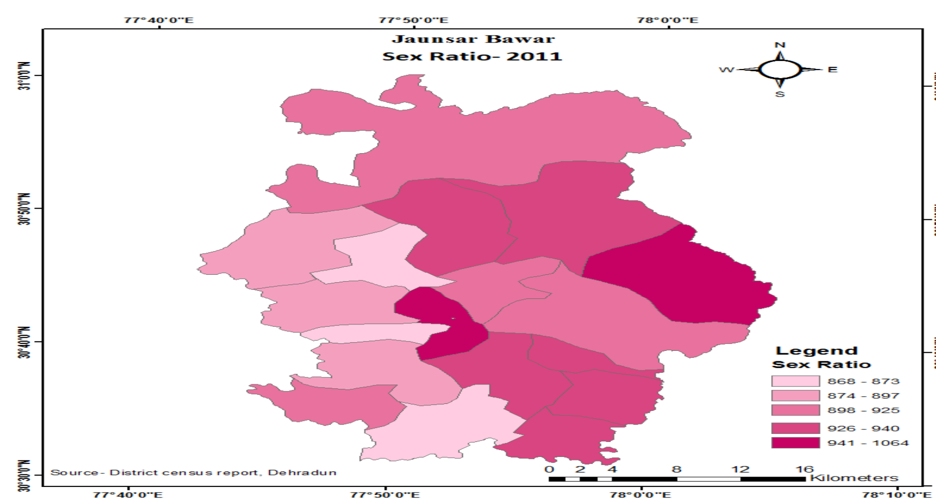

मानचित्र–4: जौनसार–बावर में न्याय पंचायतावार लिंगानुपात (वर्ष 2011)

तालिका संख्या– 5: जौनसार–बावर में न्याय पंचायतवार लिंगानुपात (वर्ष 2011)

क्र0स0	**न्याय पंचायत का नाम**	**लिंगानुपात/1000**
1	कालसी	873
2	भंजरा	887
3	उदपाल्टा	940
4	खाडी	934
5	कोटी	908
6	मुन्धान	935
7	नराया	868
8	कोरवा	1064
9	डागुरा	940
10	बृनाड बास्तिल	921
11	भुनाड	935
12	काण्डोई बोन्दर	1044
13	मिण्डाल	925
14	डिमिच भन्द्रोली	938
15	दसऊ	897
16	बेगी	896
17	जाडी	872
18	रंगेऊ	918

स्रोत–विकास खण्ड़ कालसी व चकाराता सांख्यिकी विभाग

उपर्युक्त तालिका संख्या–5 एवं मानचित्र संख्या–4 से स्पष्ट है कि वर्ष 2011 का प्रति हजार पुरूषों में स्त्रियों की संख्या सबसे अधिक कोरूवा न्याय पंचायत में स्त्रियां 1064 है।इसके बाद प्रति हजार पुरूषों पर सबसे अधिक स्त्रियों की संख्या न्याय पंचायत काण्डोई बोन्दोर में 1044 स्त्रियां है। सबसे कम प्रति हजार पुरूषों पर नराया न्याय पंचायत में 868 स्त्रियां पायी गयी है। अन्य न्याय पंचायत में उदपाल्टा व डागुरा में प्रति हजार पुरूषों पर 940 स्त्रियां, डिमिच भनद्रोली में 9381 स्त्रियां, मुन्धान व मूनाड में 935 स्त्रियां, खाडी में 934 स्त्रियां, मिण्डाल में 925 स्त्रियां, बृनाल बास्तिल में 921 स्त्रियां, रंगेऊ में 918 स्त्रियां, कोटी में 908 स्त्रियां, दसोऊ में 897 स्त्रियां, बेगी में 896 स्त्रियां, भंजरा में 887 स्त्रियां, कालसी में 873 स्त्रियां, व जाडी में प्रति हजार पुरूषो पर 872 स्त्रियां है। इसी प्रकार से कुल मिलाकर देखा जाये तो वर्ष 2001 से 2011 के

दशक में प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या में वृद्धि देखने को मिली है। जो अपने आप में विकास का महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

निष्कर्ष (Conclusion)

जौनसार–बावर क्षेत्र में भौगोलिक विभिन्नताओं वाला पर्वतीय क्षेत्र है। जिससे इस क्षेत्र में जनसंख्या का समान वितरण नहीं पाया गाया क्षेत्र में भौगोलिक विषमताओं के कारण यहां जनसंख्या के वितरण में विभन्नता पायी गयी। विकास खण्ड कालसी व चकराता में जनसंख्या घनत्व का प्रतिरूप समतल भागों में सामान्य और पर्वतीय भागों में असामान्य पाया गया है क्योकि अधिवासों की संख्या के साथ–साथ जनसंख्या का प्रतिशत भी उन्ही क्षेत्रों में अधिक है जहां कृषि का घनत्व भी अधिक पाया है। इस क्षेत्र में अधिकतम पर्वतीय ग्रामीण अधिवास पहाड़ी ढालों पर बसे हुऐ है। समतल भागों में स्थित गांव किसी नदी, सड़क व कृषि योग्य भूमि के आस–पास फेले है परन्तु वर्तमान समय में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि उन्ही स्थानों पर पायी गयी है। जहां सेवा केन्द्र स्थित है। जनसंख्या घनत्व में अन्तर का मुख्य कारण यह है कि विकास खण्डों के प्रत्येक न्याय पंचायत के क्षेत्रफल एंव जनसंख्या में अन्तर पाया गया है जिसका एक ही कारण है कि भौगोलिक पृष्ठभूमि भी जनघनत्व को प्रभावित करती है। सम्पूर्ण जौनसार–बावर क्षेत्र में वर्ष 1991 से 2011 दशकों के जनगणना के आकड़ों के अनुसार जनसंख्या वृद्धि दर में अति अधिकतम वृद्धि दर नही रही जिसका मुख्य कारण था कि जौनसार–बावर जनजातिय क्षेत्र में संयुक्त परिवार व्यवस्था एवम् बहुपत्नि प्रथा विधमान थी जो अपने आप में जनसंख्या नियंत्रण का प्रमुख कारण था।

संदर्भ (Reference)

1. Bhanu Ram (1986): Integrated Area Development in Chakrata Tehsil of Garhwal Himalaya, Dissertation in Geography, D.B.S. College, Dehradun.
2. Freklin, H. S. (1956): The Pattern of Sex Ratio in Newzeland, Economic Geography, Vol. 32, pp. 168.
3. Prasad, H. (1999): Framework of Regional Eco-Development Studies in the Himalayan Basin, in **Environmental Management and Regional Development in the Himalaya**, Ed. Rawat M.S.S., Department of Geography, H.N.B Garhwal University, Srinagar Garhwal.
4. शर्मा, अनिता (1989)ः चमोली जनपद में जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन अप्रकाशित शोध ग्रंथ, हे0न0ब0ग0वि0वि0 श्रीनगर, पृ0 सं0 13।
5. कौशिक, गौतमः संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड मेरठ, पृ0 सं0 196।
6. मेमोरिया, सी0 वी0 (1978)ः आधुनिक भारत का बृहद भूगोल, साहित्य भवन आगरा, पृ0 सं0 515।
7. खर्कवाल, एसी0 सी0ः हिमालय का प्रादेशिक भूगोल, नूतन पब्लिकेशन कोटद्वार, पृ0 सं0 101।
8. हुसैन, एम0 एण्ड हासिया, एच0 (1956)ः सीजनल माईग्रेशन ऑफ कश्मीरी लेबर, रामा पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, पृ0 सं0 99।
9. बिष्ट, एन0 एस0 (1981)ः उत्तराखण्ड हिमालय की अर्थव्यवस्था, भागीरथी प्रकाशन गृह, नई टिहरी, पृ0 सं0 10।